मयंकमंजरी

महानाटक

शृंगाररसका एक अपूर्व दृश्य

"वीणावादनतत्त्वज्ञः स्वरजातिविशारदः ॥
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गंप्रयच्छति १
काव्यालापाश्चयेकेचित् गीतिकान्यखिलानिच ॥
शब्दरूपधरस्यैते विष्णोरंशामहात्मनः" २

श्रीनिम्बार्कसंप्रदायाचार्य्य श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी
सम्पादक आर्य्यपुस्तकालय (आरा) विरचित

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई,) के छापेखाने में छपी
जूलाई सन् १८६१ ई० ॥